मूल्य
60/-

राष्ट्रीय मासिक
● वर्ष-17 ● अंक-5 ● दिसंबर 2023 ISSN: 2582-4392
www.krishiworld.in

कृषि वर्ल्ड

मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ विशेष

कृषि, पंचायत, सहकारिता, पशुपालन, मत्स्यकी, ग्रामोद्योग, ग्राम विकास, ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी समाचारों पर आधारित

मिर्च की उन्नत जैविक खेती

आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकी और उसका महत्व

●POSTAL REGN NO.- C.G./RYPDN/35/2022-24 ●RNI NO.- CHHHIN/2007/19918 ●www.facebook.com/editor.krishiworld

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा पंजीकृत मान्यता प्राप्त पंजीयन क्रमांक-RNI NO.-CHHHIN/2007/19918

कृषि वर्ल्ड

वर्ष-17 अंक-05 दिसम्बर 2023

संपादक
पुष्पकांत शर्मा
कार्यकारी संपादक
निधि शर्मा
सह-संपादक
शमी इमाम
सलाहकार संपादक
डॉ. बीसी जैन
डॉ. पीएल जॉनसन
तकनीकी संपादक
डॉ. नितिन कुमार तुर्रे
हेमंत पाणीग्रही
डुनेश कुमार देवांगन
प्रतिनिधि
मध्यप्रदेश- प्रवीण नारायण सिंह गहलोत
बिहार- मतीउर्रहमान
दिल्ली- सुमीत सिंह
राष्ट्रीय कार्यालय
20 बी सनसाइन काम्पलेक्स, मयूर विहार फेज-।।।
नई दिल्ली-110096
प्रधान कार्यालय
शॉप नं.-एफएफएस-51, प्रथम तल, भक्तमाता कर्मा परिसर (आरडीए मुख्यालय) न्यू राजेंद्र नगर रायपुर (छ.ग.)
फोन-0771-4077710
संपादकीय विभाग- 88789-44777
प्रसार विभाग- 88787-11777
ई.मेल.-krishiworld.editor@gmail.com

स्वामी स्पेक्ट्रम वर्ल्डवाइड के लिए प्रकाशक, मुद्रक पुष्पकांत शर्मा द्वारा मयंक ऑफसेट प्रिंटर्स, शॉप नं.-16, प्रकाश भवन, कंकाली तालाब के सामने, कंकाली पारा रायपुर से मुद्रित एवं शॉप नं.-एफएफएस-51, प्रथम तल, भक्त माता कर्मा परिसर (आरडीए मुख्यालय) न्यू राजेंद्र नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित।
फोन नं.-0771-407710
संपादक-पुष्पकांत शर्मा

सर्वाधिकार प्रकाशधीन सुरक्षित-प्रकाशित सामग्री के किसी भी प्रकार के उपयोग के पूर्व प्रकाशक/संपादक की अनुमति अनिवार्य है। पत्रिका में प्रकाशित रचना/लेखों एवं अन्य प्रकाशित सामग्रियों के विचारों से प्रकाशक/संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के वाद विवाद एवं वैधानिक प्रक्रिया केवल रायपुर जिला न्यायलयीन के अंतर्गत मान्य होगी।

अंदर के पन्नों में.....

18 सुगंधित फूलों की बढ़ती मांग का विकल्प सिट्रोनैला की खेती

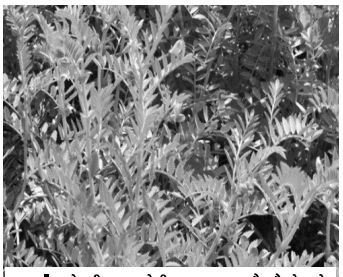

06 | चने की उन्नत खेती- कब, क्या और कैसे करें

11 | कृषि में नवाचार-ड्रोन आधारित खेती के विभिन्न.....

16 | भण्डारगृह/गोदामों में प्रमुख नाशी कीटों व चूहों ...

34 | मेथी की खेती की जानकारी जलवायु, किस्में, रोकथाम व पैदावार

आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकी और उसका महत्व....	03
मुख्यमंत्री साय के निर्देश पर बोनस राशि वितरण की तैयारियां शुरू....	04
छत्तीसगढ़ में अलसी की उन्नत खेती की सम्भावनाएँ...	05
रेशम कीट के पालन से किसानों को बेहतर आय	09
छत्तीसगढ़ में तिवड़ा की उन्नत जैविक खेती...	10
कैसे करें चूहों की समस्या का निदान...	13
कृषि उद्यमिता-कृषि में उद्यमिता की आवश्यकता एवं महत्व..	14
सुगंधित फूलों की बढ़ती मांग का विकल्प सिट्रोनैला की खेती....	18
अलसी की जैविक, विकसित एवं उन्नत खेती....	20
केंचुआ खाद का मृदा में उपयोग...	22
गुलाब की विकसित एवं उन्नत खेती...	24
सफेद मूसली की जैविक खेती कैसे करें..	26
दिसंबर माह में क्या-क्या करें किसान भाई....	28
फेरोमोन ट्रैप का खेती में महत्व और सावधानियां...	30
गोमूत्र और गोबर सर्वश्रेष्ठ उर्वरक और कीटनाशक.....	32

छत्तीसगढ़ में अलसी की उन्नत खेती की सम्भावनाएँ

● **डॉ. पी.मूवेंथन, डॉ. रेवेन्द्र कुमार साहू, दिलीप कुमार बांधे एवं नीलम जायसवाल**

आईसीएआर-नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ बायोटिक स्ट्रेस मैनेजमेंट, बरोंडा, रायपुर, छत्तीसगढ़

● अलसी की खेती छत्तीसगढ़ में बोता और उतेरा पद्धतिसे की जाती है। तिलहन फसलों में अलसी दूसरी महत्वपूर्ण फसल है इसके तने सेलिनेन नामक उपयोगी रेशा प्राप्त होता है। अलसी में ओमेगा -3 व ओमेगा-6 पालीअनसेचुरेटेड फैटी एसिड पाये जाते है।

● आयुर्वेद में अलसी को दैनिक भोजन माना जाता है। अगर किसान भाई अलसी की उन्नत खेती करना चाहते हैं तो जरूरी है कि अलसी की उन्नत खेती की जानकारी हो जिससे फसल उपज अच्छी हो।

● अलसी का उपयोग तेल,खली के रूप में किया जाता है। तेल की मात्रा बीज में 43 प्रतिशत पायी जाती है। अलसी की तेल 20:खाने में बाकी की 80:भाग वार्निस,इंक पैड, छपाई इंक, साबुन बनाने, माउथ फ्रेशनरइत्यादि के कार्यो में लाये जाते है।

● अलसी फसल की देखरेख अन्य फसलो की तुलना में कम लगती है, इसलिए इसकी खेती करना आसान होता है।

● मृदा का चयन करना- अलसी की खेती के लिए डोरसा व कन्हार भूमि अच्छी मानी जाती है साथ ही जल निकास की सुविधा हो। मृदा की जुताई दो-तीन बार पाटा चलाकर मिट्टी को अच्छी तरह से भूरभूरी कर ले।

बीज दर व बीज उपचार: असिंचित अवस्था में 30 कि.ग्रा./हे. सिंचित अवस्था में 20 कि.ग्रा/हे. और मिश्रित अवस्था में 8-10 कि.ग्रा./हे. की दर से बीज की आवश्कता होती है।

● बीज को बोने से पहले फफूंदनाशक दवा कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति कि.ग्रा.बीज की दर से करे या जैव फफूंदनाशक ट्राइकोडर्मा 6-10 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करे।

● अलसी की बुआई अक्टूबर माह के अंतिम सप्ताह और नवम्बर के प्रथम सप्ताह तक कर दी जाये। कतार से कतार की दूरी 25-30 से.मी. होनी चाहिये। कतार बुआई के लिए दो चाड़ी वाले नवगांव नारी हल से और ट्रेक्टर चलित सीड ड्रिल का उपयोग किया जाता है।

अलसी की किस्म:

दीपिका (आर.एल.सी.-78),आर.एल.सी.-92,आर.एल.सी.-133,आर.एल.सी.-76, इंदिरा अलसी-32, आर.एल.सी.-81,आर.एल.सी.-552, इत्यादि किस्मछ.ग. के लिए उपयुक्त मानी जाती है-

उर्वरक की दर: नत्रजन 40-60 कि.ग्रा.,20-30 कि.ग्रा. स्फुर व 20-30 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हेक्टेयर की दरसे उपयोग करे।गंधक तत्व तिलहनी फसलो में तेल की मात्रा बढ़ाने में सहायक होता है। 10 कि.ग्रा. सल्फर प्रति हेक्टेयर की दर से पर्याप्त होती है।

निराई-गुड़ाई: जब 1 माह की हो जाये तब अलसी की फसल में निदाई-गुड़ाई का कार्यकरे, 2 से 3 निराई-गुड़ाई की आवश्यकता होती है।

खरपतवारनाशी: पेन्डिमेथालिन 30 ई.सी का उपयोगचैड़ी सकरी पत्ती वाले खरपतवार के लिए300-400 ग्राम प्रति एकड़ की दर से बोने के 0-3 दिन केबादछिड़काव करें।

सिंचाई: अलसी की फसल मेंएक से दो सिंचाई

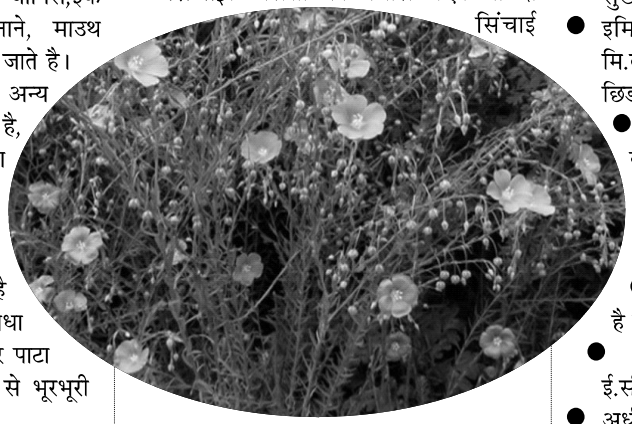

पर्याप्त होती है।प्रथम 30-40 दिन बाद, दूसरी फसल अवधि 60-70 दिन की हो जाये तब करे।

अलसी फसल के प्रमुख रोग व कीट प्रबंधन:-

1. **गेरूआ रोग:** रोग लक्षण पत्तियों,तनों एवं फलियों पर चमकीले पीले रंग की छोटे छोटे फून्सियां (पश्यूल) ताम्बे रंग जैसे दिखाई पड़ती है। पत्तियां अपरिपक्व अवस्था में ही गिर जाती है।

● घुलनशील गंधक 3 ग्राम/लीटर या कैलेक्सीन 1 ग्राम/लीटर की दर से छिड़काव करे 8-10 दिन के अन्तराल में दो बार।

2. **उकठा रोग:** ग्रसित पौध अगकलिका मुरझाने लगती है। धीरे -धीरे पौध सूखकर मर जाती है। यह रोग फ्यूजेरियमनामक फफूंद से होता है।

● बीज उपचार - कार्बेन्डाजिम 2-3 ग्राम/किलो या ट्राइकोडर्मा विरडी/हरजीयानम 5-10 ग्राम/किलो बीज की दर से उपचार करे, फसल चक्र अपनाये, प्रतिरोधी जाति का चुनाव करे।

3. **अल्टरनेरिया पर्ण दाग:**- पत्तियों, तनो एवं पुष्प कलिकाओं पर भूरे रंग के छोट-छोटे धब्बे बनते है।

● डायथेन एम.-45, 3 ग्राम/लीटर पानी/प्रोपीकोनाजोल

4. **भभूतिया रोग:**ऊपरी पत्तियों में सफेद पाऊडर समान चमकते दिखाई देते है।

● घुलनशील गंधक 0.3्का छिड़काव करे 2 बार 8-10 दिन के अंतराल में।

कीट प्रबंधन

● **अलसी की कलिका मक्खी:** इल्ली कलिकाओं के अन्दर प्रवेश कर अण्डाशय को खा जाती है। फलियां नही बन पाती है। सुखकर लौंग जैसी दिखाई पड़ता है।

● इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल् 125 मि.ली./हे. 15 दिन के अंतराल में दो बार छिड़काव करे।

● **इल्ली:** इल्लियां पत्तियों की बाहरी त्वचा को खाकर जालीदार कर देती है। पौध पत्तिविहीन हो जाते है। कार्बोरिल 50 डब्ल्यू.पी. दवा का 0.1 घोल छिड़काव करे।

● **जड़ भक्षी दीमक:**-जड़ को काट देती है जिससे पौध सुख जाता है।

● बीज उपचार -क्लोरपायरीफास 20 ई.सी. से 450 मि.ली. प्रति क्वि. बीज दर।

● अर्ध कुण्डल इल्ली:- पौध पत्तियों को खाकर नुकसान पहुचाती है।

● क्विनलफास 25 ई.सी.की 750-1000 मि.ली./हेक्ट.।

कटाई-गहाई प्रक्रिया:-अलसी की फसल अगेती किस्म 103-105 दिन में पककर तैयार हो जाती है। पछेती किस्म 130-140 दिन में और मध्यम किस्म-110-120 दिन में तैयार हो जाती है।

● पत्तियां पीली होकर सूख जाये,फलियों का रंग हल्का भूरा हो जाये तब कटाई प्रारम्भ कर दे।

● कटाई के बाद धूप में सूखाकरगहाई करे।

● बीज को सूखे स्थान पर भण्डारण करे।

उपज:- सिंचित अवस्था में 12.15 क्विंटल प्रति हेक्टेयर और असिंचित अवस्था में 7-8 क्विंटल उपज प्राप्त होती है।